मुरलीधर श्री कृष्ण से संबंधित मध्यकाल में विभिन्न कवियों और ख्याल गायकों का योगदान

ज्योति शर्मा
शोध छात्रा, संगीत विभाग, पंजाब विश्वविद्यालय, चंडीगढ

सारांश

कृष्ण भक्ति शाखा, सगुण भक्ति की सबसे शक्तिशाली धारा मानी जाती है। इसमें श्रीकृष्ण के मनमोहक रूपों का प्रचार किया गया। कृष्ण के श्याम, गोपाल, मुरलीधर, नंदलाल, माखन चोर, यशोदा दुलारे गोपी कृष्ण, राधा कृष्ण आदि रूपों की भक्ति के लिए चुना। कृष्ण भक्ति साहित्य आनंद और उल्लास का साहित्य है जिनका श्रेय इसमें निहित संगीत को जाता है।

वैसे तो निर्गुण संतों व सगुण धारा उन्नायक व उदगायक सभी अग्रणी कवियों द्वारा रचित साहित्य में राग रागनियों, सुर, ताल, लय पर आधारित शब्दों, पदों और भजनों में संगीत की अजस्त्र मधुर धारा प्रवाहित हो रही है क्योंकि इस युग में संगीत की मर्मज्ञता कदाचित् कवि व्यापार का नैसर्गिक अंग माना जाता था।

7वीं शताब्दी से उत्तर भारत में भवनों के आक्रमण के साथ यहाँ की धार्मिक भावनाओं को ठेस पहुंची तथा नैतिक मूल्यों का भी पतन हुआ। उत्तर भारत में मुग्लों का राज्य हो गया। ये राजा संगीत एवं कला प्रेमी तो ये लेकिन भोग विलास की प्रकृति के थे। राजाश्रयों में कला एवं संगीत राजाओं के मनोरंजन के लिए प्रयुक्त होने लगे। भोग विलास के इस वातावरण में यहां के संतों ने आन्दोलन किया जो कि भक्ति आन्दोलन था। यह उनका प्रतिक्रियावादी दृष्टिकोण था। इसके परिणाम स्वरूप भक्त कवियों ने घूम–घूम कर गायन द्वारा ईश्वर परक साहित्य का प्रचार किया।

मध्यकाल को भक्तिकाल माना गया है। सगुण तथा निर्गुण भक्ति की दो धाराएँ प्रवाहित हुई। सगुण भक्ति धारा में राम तथा कृष्ण का गुणगान हुआ। तुलसीदास जी ने 'रामचरितमानस' नामक अमर गेय काव्य की रचना की तो सूर, मीरा, आदि अष्टछाप के कवियों ने कृष्ण की स्तुति में विभिन्न काव्य रचना कर गान किया। इस प्रभाव शास्त्रीय संगीत की रचनाओं पर पड़ा। सूर जैसा भाव, मीरा जैसा प्रेम और तुलसी जैसे श्रद्धा रखकर भक्ति संगीत प्रस्तुत किया जायें, तो मनुष्य का जीवन सफल हो जाना मुरलीधर श्रीकृष्ण से संबंधित आधुनिक काल तक विभिन्न कवि या गीतकार लिखते चले आये है।

मध्ययुग में ही एक से एक अच्छे संगीतज्ञ एवं संत हो गए हैं जैसे स्वामी हरिदास, तानसेन, बैजू, कबीर, मीरा, सूर, तुलसी आदि जिन्होंने आध्यात्मिकता की चरम सीमा को संगीत के माध्यम से प्राप्त किया और जन साधारण को उसका अनुभव कराया। आज भी ऐसे अनेकों लोग हैं जो सर्वथा अनपढ़ होते हुए भी इन कवि भक्तों के अनेक पद गा कर सुना सकते हैं।

ऐतिहासिक शोध प्रविधि का प्रयोग करते हुए माध्यमिक स्रोतो द्वारा शोध पत्र को सम्पूर्ण रूप दिया गया है।

कृष्ण भक्ति शाखा, सगुण भक्ति की सबसे शक्तिशाली धारा मानी जाती है। इसमें श्रीकृष्ण के मनमोहक रूपों का प्रचार किया गया। कृष्ण के श्याम, गोपाल, मुरलीधर, नंदलाल, माखन चोर, यशोदा दुलारे गोपी कृष्ण, राधा कृष्ण आदि रूपों की भक्ति के लिए चुना। कृष्ण भक्ति साहित्य आनंद और उल्लास का साहित्य है जिनका श्रेय इसमें निहित संगीत को जाता है।

वैसे तो निर्गुण संतों व सगुण धारा उन्नायक व उदगायक सभी अग्रणी कवियों द्वारा रचित साहित्य में राग रागनियों, सुर, ताल, लय पर आधारित शब्दों, पदों और भजनों में संगीत की अजस्त्र मधुर धारा प्रवाहित हो रही है क्योंकि इस युग में संगीत की मर्मज्ञता कदाचित् कवि व्यापार का नैसर्गिक अंग माना जाता था।

7वीं शताब्दी से उत्तर भारत में भवनों के आक्रमण के साथ यहाँ की धार्मिक भावनाओं को ठेस पहुंची तथा नैतिक मूल्यों का भी पतन हुआ। उत्तर भारत में मुग्लों का राज्य हो गया। ये राजा संगीत एवं कला प्रेमी तो ये लेकिन भोग विलास की प्रकृति के थे। राजाश्रयों में कला एवं संगीत राजाओं के मनोरंजन के लिए प्रयुक्त होने लगे। भोग विलास के इस वातावरण में यहां के संतों ने आन्दोलन किया जो कि भक्ति आन्दोलन था। यह उनका प्रतिक्रियावादी दृष्टिकोण था। इसके परिणाम स्वरूप भक्त कवियों ने घूम–घूम कर गायन द्वारा ईश्वर परक साहित्य का प्रचार किया।

मध्यकाल को भक्तिकाल माना गया है। सगुण तथा निर्गुण भक्ति की दो धाराएँ प्रवाहित हुई। सगुण भक्ति धारा में राम तथा कृष्ण का गुणगान हुआ। तुलसीदास जी ने 'रामचरितमानस' नामक अमर गेय काव्य की रचना की तो सूर, मीरा, आदि अष्टछाप के कवियों ने कृष्ण की स्तुति में विभिन्न काव्य रचना कर गान किया। इस प्रभाव शास्त्रीय संगीत की रचनाओं पर पड़ा। सूर जैसा भाव, मीरा जैसा प्रेम और तुलसी जैसे श्रद्धा रखकर भक्ति संगीत प्रस्तुत किया जायें, तो मनुष्य का जीवन सफल हो जाना मुरलीधर श्रीकृष्ण से संबंधित आधुनिक काल तक विभिन्न कवि या गीतकार लिखते चले आये है।

कृष्ण भक्ति अपनी संगीतात्मकता से आज भी उसी प्रकार लोकप्रिय है और विदेशों में भी इसका विस्तार होता जा रहा है। कृष्ण काव्य गेय पदों में लिखा गया है। वह प्रबन्ध काव्य नहीं है। उसमें कथा का निर्वाह नहीं हुआ है। उसका लक्ष्य अपने प्रभु के प्रेम में लीन हो कर उनके लीला सौन्दर्य का वर्णन करना ही था। कृष्ण भक्त कवियों ने प्रत्येक प्रसंग पर संगीतात्मक एवं गेयता से युक्त पदों का निर्माण किया। कृष्ण भक्ति के सबसे महत्त्वपूर्ण कवि भक्त सूरदास माने जाते हैं। उन्हें हिन्दी साहित्य का सूर्य माना जाता है।

मध्ययुग में ही एक से एक अच्छे संगीतज्ञ एवं संत हो गए हैं जैसे स्वामी हरिदास, तानसेन, बैजू, कबीर, मीरा, सूर, तुलसी आदि जिन्होंने आध्यात्मिकता की चरम सीमा को संगीत के माध्यम से प्राप्त किया और जन साधारण को उसका अनुभव कराया। आज भी ऐसे अनेकों लोग हैं जो सर्वथा अनपढ़ होते हुए भी इन कवि भक्तों के अनेक पद गा कर सुना सकते हैं। इतनी प्राचीन परम्परा वाले भारतीय संगीत चिन्तन के पीछे जो मुख्य विशेषता रही है, स्पष्ट है कि वह भारतीय संगीत में निहित आध्यात्मिकता है। कतिपय भारतीय मनीषियों के जीवन प्रसंग निम्नलिखित हैं जिससे स्पष्ट होता है कि भारतीय संगीत एवं अध्यात्मक अलग नहीं बल्कि एक हैं।

स्वामी हरिदास – स्वामी हरिदास ब्रज की महान् विभूति थे। मध्यकालीन उपासना, भक्ति और साहित्य के क्षेत्र में उनका नाम अमर है। वे ब्रज की राधा–कृष्णोपासना के एक विशिष्ट मत के प्रवर्त्तक और संगीत के विख्याते आचार्य थे। वह एक साथ धर्माचार्य एवं संगीताचार्य थे। तानसेन जैसा सर्वमान्य गायक उनका शिष्य कहा जाता है। उनकी जीवनचर्या के अध्ययन से ज्ञात होता है कि संगीत उनका लक्ष्य नहीं था, वह तो उनकी उपासना और भक्ति का एक साधन मात्र था। फिर भी संगीत के क्षेत्र में उनकी जो विशिष्ट देन है, उसे कम नहीं समझा जा सकता।

स्वामी जी की उपासना सखी (गोपी) भाव की थी और उनकी भक्ति वैराग्यमूलक माधुर्य भाव की। इस प्रकार उनकी उपासना और भक्ति में चरम सीमा की रसिकता होते हुए भी वैराग्य की प्रधानता

थी। उनके प्रभावशाली व्यक्तित्व, उत्कृष्ट वैराग्य, अलौकिक संगीत और विशिष्ट भक्ति भाव के कारण उनके अनेक भक्त हो गए थे।

तानसेन – भारत के महान् संगीतज्ञों और गायकों में तानसेन का नाम सबसे अधिक प्रसिद्ध है। वह मुगल सम्राट् अकबर के दरबारी गायक और उनके नवरत्नों में से एक थे। अपनी गायन कला के कारण वह इतने विख्यात् हुए कि अपने समय के संगीत सम्राट् माने जाते थे।

तानसेनकी प्रमुख रचनाएं वे अनेक ध्रुपद हैं जो लिखित अथवा मौखिक रूप में उपलब्ध हैं। लिखित रूप में वे संगीत के विविध ग्रन्थों में बिखरे पड़े हैं और अलिखित रूप में वे पुराने घरानों से सम्बन्धित कलावंतों को कंठस्थ हैं। उनके उपलब्ध ध्रुपदों से ज्ञात होता है कि वे अधिकतर देव वन्दना, ज्ञान भक्ति, राग प्रशंसा, संगीत विवेचन, नायिका भेद और कृष्ण लाली से सम्बन्धित है। देव वन्दना विपय के ध्रुपदों में – गणेश, सरस्वती, शंकर, दुर्गा व हिन्दु देवी देवताओं की स्तुति की गई है।

इसके साथ ही उन्होंने मुसलमानी धर्म के पीर–पैगम्बरों के प्रति भी अपनी श्रद्धा व्यक्त की है। ज्ञान भक्ति के ध्रुपदों में ब्रह्म की व्यापकता का कथन है। कृष्ण लीला विषयक ध्रुपदों में भगवान श्री कृष्ण की बाल और निकुंज लीलाओं के वर्णन के साथ ही साथ उनके वेणु वादन और होली खेल का रसपूर्ण कथन किया गया है।

बैजूबावरा – बैजूबावरा भी स्वामी हरिदास के शिष्य थे। उनके गायन में आध्यात्मिक आनन्द की अनुभूति थी। तानसेन और बैजूबावरा की संगीत प्रतियोगिता प्रसिद्ध हैं। अकबर भी बैजूबावरा के गायन से मुताखिर थे। उन्होंने कई रागों का आविष्कार किया।

जयदेव – जयदेव मध्य काल में संस्कृत के प्रसिद्ध कवि तथा संगीतज्ञ जयदेव ने 'गीत गोविन्द' की रचना की। इस ग्रन्थ में राधा–कृष्ण सम्बन्धी गेय गीत हैं जो आज भी गाए जाते हैं तथा उन्हें नृत्य एवं अभिनय में भी गाया जाता है। 'गीत गोविन्द' में आध्यात्मिकता और संगीत का सामंजस्य है। इस ग्रन्थ में भावों के अनुकूल रागों का प्रयोग हैं। राग–रागिनी तथा तालों का निर्देश है, भक्ति और श्रृंगार का समन्वय है और कोमलकांत पदावली में पद रचना है। संगीत के शास्त्रीय विधान के अन्तर्गत राधा–कृष्ण की मधुर लीलाओं के गान की परम्परा जयदेव के गीत गोविन्द में मिलती है।

अमीर खुसरो – 1253 ई. में उत्तर भारत में पैदा हुए अमीर खुसरो की काव्य एवं भारतीय संगीत को एक अनुपम देन है। उनकी रचनाओं में अध्यात्म एवं संगीत का सामंजस्य है। उन्होंने अपने आध्यात्मिक गुरू शेख निज़ामुद्दीन औलिया की शान में जो कविताएं लिखीं वह आज भी कव्वाली रूप में सुनने को मिलती है।

सूरदास – इसी काल में महाकवि एवं अच्छे गायक भक्त शिरोमणि सूरदास हुए। उनके सूरसागर के पदों में भाव और स्वर एवं अध्यात्म और संगीत का आदर्श संगम हैं। मध्य काल में प्रचलित सभी राग–रागिनियों का प्रयोग सूरसागर में हुआ है, जिससे वह विशाल राग सागर बन गया है। इनके 'सूर सारावली' तथा 'साहित्य लहरी' ग्रन्थ भी विशेष महत्वपूर्ण हैं। सूरदास ने ब्रह्म के निर्गुण और सगुण दोनों रूपों को वास्तविक माना है। (पद सं. 4) निर्गुण की सगुण रूप में अभिव्यक्ति श्री

कृष्ण के रूप में ब्रज में हुई है। सूरदास ने अनेक पदों में कृष्ण के पूर्ण ब्रह्म पुरूषोत्तम परमानंदमय रूप की वन्दना की है। भगवान भक्तवत्सल हैं, कृपा निधान हैं, दीन दयालु एवं करूणामय हैं और बिना उनकी कृपा के भक्ति संभव नहीं है। अतः सूरदास का भक्ति भाव संगीत द्वारा ही शाश्वत हुआ है।

मीरा बाई – कृष्ण–साहित्य में संगीत योजना का जो रूप है, वही मीरा के पदों में भी मिलता है। संगीतात्मकता मीरा की भाषा की प्रमुखतम विशेषता है। मीरा काव्य अध्यात्म भावों का अपार सागर है। इसका कारण यह है कि मीरा मूलतः भक्त थीं–प्रेम पीर में दीवानी। काव्य इनका साधन था साध्य नहीं। इसलिए इनके प्रत्येक शब्द से इनका सरस एवं भाव–भरा हृदय बोलता है। अपनी अध्यात्म भाव–प्रवणता के कारण मीरा का स्थान भक्तिकालीन कवियों में मूर्धन्य है। इनके पदों में अनेक राग–रागिनियों का विधान है। इनके पदों में मुरली, मृदंग, इकतारा जैसे अनेक वाद्य यन्त्रों तथा नृत्य का उल्लेख मिलता है। संगीत ने इनकी अध्यात्म भावनाओं को जन जन तक पहुंचाया।

चैतन्य महाप्रभु – चैतन्य महाप्रभु ने भी अपनी भक्ति भावना को संगीत द्वारा सामान्य जनता तक पहुंचाया। संगीतमय कीर्तन उनकी आध्यात्मिकता का प्रतीक था। अतः संगीत के क्षेत्र में यह उनका विशेष योगदान था।

गुरू नानक देवगुरू – नानक देव जी ने भी कीर्तन को आराधना एवं भक्ति का एकमात्र साधनमाना। आपका जन्म सवत् 1526 में तलवंडी नामक स्थान पर हुआ। बचपन से ही आपका ध्यान त्याग, वैराग्य एवं भक्ति की ओर उन्मुख हुआ। आपने अपनी आध्यात्मिक भावनाओं को संगीत द्वारा प्रस्तुत किया। आसा, गुजरी, बड़हंस, सोरठ, धनाश्री, तिलंग, सूही, बिलावल, रामकली, बसंत, सारंग, मलार, प्रभाति तुखारी, श्री, मांझ, गउड़ी आदि रागों में पद प्रस्तुत कर गुरू नानक देव जी ने अध्यात्म और संगीत को एकत्व प्रदान किया। उन्हीं का साथी मरदाना रबाब बजा कर गुरू नानक देव जी की कीर्तन में संगति करता था।

गुरू गोबिन्द सिंह – सिक्ख सम्प्रदाय के दसवें गुरू श्री गुरू गोबिंद सिंह जी का दशम ग्रन्थ उनकी अनुपम काव्य रचनाओं का संकलन है, जिनमें उन्होंने 18 रागों का प्रयोग किया है। आध्यात्मिक भावाभिव्यक्ति के लिए उन्होंने कीर्तन को विशेष महत्त्व दिया। अतः उन्होंने अपने पूर्वजों द्वारा चलाई कीर्तन शैली को जो कि शास्त्रीय रागों पर आधारित है, को पूर्ववत आगे बढ़ाया।

निष्कर्ष

उपरोक्त समीक्षा निष्कर्ष रूप में हम कह सकते हैं कि मध्यकाल में उत्तर एवं दक्षिण भारत में अनेकों संत कवि हुए जिनकीं आध्यात्मिक अभिव्यक्ति का साधन संगीत था। आध्यात्मिक काव्य की भाषा कोई भी हो लेकिन संगीत ने उसे सहज रूप से जन जन तक पहुंचा कर उसे शाश्वत बनाया। मुगल काल में ही अंग्रेजों का भारत में आगमन हो चुका था। उनका भारतीय संगीत के प्रति उदासीनता का भाव रहा। लेकिन अध्यात्म एवं संगीत के समन्वय को नकारा, नहीं जा सकता। पं. विष्णु दिगम्बर प्लुस्कर तथा पं. विष्णु नारायण मातखण्डे की संगीत को अद्वितीय देन 'स्वरलिपि पद्धति' ने आध्यात्मिकता को संगीत के साथ जोड़े रखा। सूर, मीरा, तुलसी, कबीर आदि संत कवियों के भक्तिपूर्ण पद स्वरलिपि पद्धति के कारण भावी पीढ़ी के लिए सुरक्षित हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ

गुप्ता उषा, हिन्दी कृष्ण भक्तिकालीन साहित्य में संगीत, प्रकाशक लखनऊ विश्वविद्यालय, प्रभ माव्रति, 2006
नगेन्द्र, रस सिद्धांत, नेशनल पब्लिशिंग हाऊस दिल्ली, 1974
श्री मदभगवद्गीता, गीताप्रेस गोरखपुर – 273005
श्री मद्भागवतमहापुराण, महर्षि वेदव्यास, गीताप्रेस, गोरखपुर–273005
डॉ. शर्मा सुनीता, भारतीय संगीत का इतिहास, संजय प्रकाशन दिल्ली प्र. सं. 1996
गैशेला वाचस्पति, भारतीय संस्कृति और कला, हिन्दी ग्रंथ अकादमी, लखनऊ 1973
शर्मा पंकज माला, सामगानः उद्भव व्यवहार एवं सि(ांत, कान्यायन वैदिक साहित्य प्रकाशन होशियारपुर, 1996
शास्त्री देवव्रषि, कलानाथ संस्कृत साहित्य का इतिहास, धमाणी मार्किट की गलि, चौड़ा रास्ता, जयपुर संस्करण 2009
विष्णु पुराण, गीता प्रेस गोरखपुर।
पं विष्णु नारायण भातखण्डे, क्रमिक पुस्तक मालिका भाग–3,संगीत कार्यालय हाथरस, संस्करण 1994
पांडे अमिता, ख्याल गायकी और भक्ति रस, कनिष्क पब्लिशर्स, प्रथम संस्करण 2014
लक्ष्मी नारायण गर्ग, निबंध संगीत संगीत कार्यालय हाथरस, संस्करण 2003

पत्रिकाएँ

भक्ति संगीत अंक संगीत कार्यालय हाथरस, 1970
काव्य और भक्ति संगीत अंक कार्यालय हाथरस